अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

अनासक्ति की हो साधना, कर्म बन्धनों से बच सकेगी आत्मा: महात्मा महाश्रमण

-अहिंसा यात्रा के मंगल संदेशों से जन-जन हो रहा लाभान्वित

-अहिंसा यात्रा का कारवां पहुंचा सैंट लोयबा एकेडमी

-आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को कर्मबन्धनों से बचने की दी पावन प्रेरणा

26.02.2019 पेरमब्रा, त्रिशूर (केरल): जन-जन के मानस को पावन बनाने, लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का मंगल संदेश देने के लिए केरल की धरती पर गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल संदेशों की गूंज पूरे केरल के वातावरण को आध्यात्मिक चेतना प्रदान कर रही है। यहां की आम जनता भी आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा को देखकर और आचार्यश्री के व्यक्तित्व को जानकर श्रद्धा से प्रणत हो रही है। आचार्यश्री जन-जन को अपने मंगल संदेशों से ही नहीं, बल्कि अपने मंगल आशीर्वचनों से भी लाभान्वित कर रहे हैं।

मंगलवार को महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने नंदीक्करा स्थित श्री रामकृष्ण विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल के प्रांगण से मंगल प्रस्थान किया। नंदीक्करा गांव के मध्य से गुजरते आचार्यश्री को ग्रामीणों ने वंदन किया तो आचार्यश्री ने उन्हें पावन आशीष प्रदान किया। आचार्यश्री राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 544 पर पधारे और लगभग दस किलोमीटर का विहार कर पेरमब्रा गांव स्थित सेंट लोयबा एकेडमी के प्रांगण में पधारे।

स्कूल प्रांगण में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि भोगों में आसक्त आदमी अपनी मूढता, मूर्खता के कारण अपनी आत्मा के कर्मों का सघन बंध लगा लेता है। आसक्ति एक ऐसी चिकनाहट है, जिससे कर्मों का सघन बंध होता है। आदमी कोई भोग न भी भोगे, किन्तु उसके प्रति उसके मन में आसक्ति है तो भी कर्मों का बंध होता है और वे कर्म बंध सघन रूप में आत्मा से चिपकते चले जाते हैं और आत्मा के मूल स्वरूप को अदृश्य कर देते हैं। आसक्ति एक ऐसी राक्षसी है जो आदमी की गुणात्मकता को खा जाती है। आदमी जिन-जिन कर्मों की मनोभिलाषा भी करता है, भले उसे वह प्राप्त हो न हो, वह उसका भोग करे अथवा न करे, किन्तु उसके मन में उस भोग की लालसा भी होती है तो आदमी को उस कर्म के बंध होते हैं। आदमी भौतिक पदार्थों और इन्द्रिय सुखों के पीछे भागता है और आदमी यह सोचता है कि वह पदार्थों का भोग करता है, किन्तु वास्तव में आदमी पदार्थों का भोग नहीं, बल्कि पदार्थ आदमी का भोग करते हैं। जिस प्रकार पहले आदमी शराब को पीता है और बाद शराब आदमी को पी जाती है। पहले आदमी गुटखा खाता है और फिर गुटखा आदमी को खा जाता है। इस प्रकार आदमी भोग को नहीं, भोग आदमी को भोगता है।

भोगी आदमी संसार में भ्रमण करता है और अभोगी आत्मा जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर इस संसार से मुक्ति प्राप्त कर सकती है। आदमी को कर्म बन्धन से बचने के लिए और संसार सागर से पार पाने के लिए अनासक्ति की चेतना का विकास करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी भले कोई वैसा काम करे अथवा न करे, किन्तु उसकी भावना मात्र से ही उस कर्म का बंध होता है तो आदमी वैसी भावनाओं से स्वयं को दूर रखने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अनासक्ति की भावना को पुष्ट बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। आदमी संयम की साधना के द्वारा अनासक्ति की भावना को पुष्ट बना सकता है। जिस आदमी के भीतर अनासक्ति की भावना हो तो वह गृहस्थ होते हुए भी कर्म बन्धनों से मुक्त हो सकता है। आचार्यश्री की मंगलवाणी के पश्चात स्कूल की प्रिंसिपल सिस्टर विनया ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीष के साथ पावन पाथेय प्रदान किया।